बसुंधरा

राजदेव मण्डल

श्रुति प्रकाशन
दिल्ली

ISBN :

दाम : १२५ रू. मात्र
पहिल संस्करण : २०१३

श्रुति प्रकाशन :

रजिस्टर्ड ऑफिस : ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली- ११०००८.
दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११) २५८८९६५७
Website : http://www.shruti-publication.com
e-mail : shruti.publication@shruti-publication.com

मुद्रक: अजय आर्टस्, दरिया गंज, नई दिल्ली-११०००२
अक्षर-संयोजक: श्री उमेश मण्डल
डिस्ट्रिब्यूटर:
पल्लवी डिस्ट्रिब्यूटर, वार्ड न. ६, निर्मली (सुपौल), मो. ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Basundhara *: Anthology of Maithili Poems by Rajdeo Mandal.*

परिचए-पात : राजदेव मंडल

जन्म : १५ मार्च १९६० ईं.मे।

पिता : स्व. सोनेलाल मंडल उर्फ सोनाइ मंडल।

माता : स्व. फूलवती देवी।

पत्नी : श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी।

पुत्र : निशान्त मंडल, कृष्णकान्त मंडल, विप्रकान्त मंडल।

पुत्री : रश्मि कुमारी।

मातृक : बेलहा (फुलपरास, मधुबनी)

मूलगाम : मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी।

बिहार- ८४७४५२

मोबाइल : ९१९९५९२९२०

शिक्षा : एम.ए. (मैथिली, हिन्दी, एल.एल.बी)

ई पत्र : rajdeokavi@gmail.com

प्रकाशित कृति :

(१) अम्बरा- कविता संग्रह (२०१०)

(२) बसुंधरा कविता संग्रह (२०१३)

(३) हमर टोल- उपन्यास (२०१३)

उपेक्षित रहितो
सतत कर्म साधानामे
लीन रहनिहारकेँ
सादर समरपित...

दू शब्द-

बढ़ैत पद
भऽ गद-गद
कण-कण आ जन-जन
बितैत काल
करैत अन्वेषण।

अन्वेषणमे लगल छी हम। कोन चीजक अन्वेषण? कहियासँ? स्मरण नै अछि किन्तु आइओ लगले छी। सम्प्रति नै भेटल अछि किन्तु निश्चित अछि जे भेटत। हम रही वा नै रही।

केतए जा रहल छी हम? केतए अछि मंजिल हमर? जा रहल छी निरंतर! निरूदेश्य! सीमाहीन पथपर। मौनव्रत धारण केने। अवाहन करैत बाट। बाट मध्य अहाँसँ भेँट भेल। लिअ किछु पुष्प समरपित कऽ रहल छी। ई भेँट स्वीकार कऽ लिअ आ असीरवाद दीअ। हम माथ झुकौने ठाढ़ छी।

स्वीकार करब अस्वीकारकँ।
केतौ कलह केतौ पियार
सभ स्वीकार... सभ स्वीकार...।

राजदेव मण्डल
नागपंचमी-२०१३

एकसत्तरि-

अकाल

घरक आँखि

अभ्यास

महफा आ अरथी

काटैत बीआ

कानैत हँसी

कनहेपर भोलबा

कुहेस

जानवरक बोली

उपयोग

द्वन्द

छीपपर दीप

इमानदारी

बीआ

बलात्

झूठक गियान

जेहने अहाँ तेहने हम

चिर प्रतीक्षा

हाथ

ठक

शिशुक स्वर

बोलती बन्न

दिलक आवाज

नेंगरा मजदूर

मनक दुआर

छाँहक रूप

बाबा केर लाठी

गीतक पूर्व संगीत

दगध सुर

इजोतक वस्त्र

मनुखदेवा

अप्पन हारि

स्वरक चेन्ह

सुखक भाय

हएत अगारी

रूचिगर

बजैत एकान्त

लटकल छी

बटमारिक गीत

गन्तव्यक भरम

दरदक भोर

केहेन मांग

पसरैत प्रशाखा

खसैत बुन्द
उलहन
आपसी
मोँछक लड़ाइ
दूटा धारा
चोरि
परिस्थिति
काव्य कथा,
डोलनी डाइन-१
डोलनी डाइन-२
डोलनी डाइन-३
डोलनी डाइन-४
डोलनी डाइन-५
डोलनी डाइन-६
डोलनी डाइन-७
उड़ैत अकास
स्वरमे बास
डायरीक पन्ना-१
डायरीक पन्ना-२
डायरीक पन्ना-३
डायरीक पन्ना-४
डायरीक पन्ना-५
डायरीक पन्ना-६

अकाल

परसाल तँ बचलौं बाल-बाल
ऐबेर धऽ लेलक असुर अकाल
खाली पेट नै फुटतै गाल
सबहक भेल अछि हाल-बेहाल।

हर-हर पुरबा बहि रहल अछि
कानि-कानि काका कहि रहल अछि-
झर-झर आगि बरिस रहल अछि
धानक बीआ झड़कि रहल अछि।

पियाससँ धरती फाटि रहल अछि
मवेशी दूबिकेँ चाटि रहल अछि
कतेको माससँ नै खसल एको बून पानि
की भेलै केना भेलै से नै जानि
अपनहि उजारलहक अपन सुख-चैन
गाछ कटौलहक फानि-फानि।

जलक महत बुझए पड़त
नै तँ ई दुख सहए पड़त
काल चढ़ए तँ बिगड़ए बानि
घुन सँगे सतुआ देलहक सानि
चारूभर पसरल घुसखोरबा पापी
खसल पड़ल अछि पूरा चापी

टक-टक तकैत अछि अफारे खेत
पानि बिनु उड़ैत अछि सूखल रेत
पछिला करजासँ हाल-बेहाल
ऐबेर बिका जाएत देहक खाल
नै रोपल जाएत एको कट्ठा धान
केना कऽ बचत सालभरि प्राण
ऊपर अछि धूरा भरल आसमान
नीचा अछि परिवारक मान-सम्मान।
लोक कहैत अछि-
धीरज धरह सरकार देतह
हम कहैत छी-
तेजगर लोक सभटा खेतह
रहब छूच्छे केर छूच्छे
आमजनकेँ केतौ ने कियो पूछए
बाहर कतए जाएब यौ भाय बेंगू
परदेशमे धऽ लेत डेंगू
ने खेबाक नीक आ ने सुतबाक ठीक
जेबीसँ पाइ लेत उचक्का झपटि-झींक
कियो लेत बेचि कियो लेत कीनि
ठामहि रहि जाएत कपार परक ऋृण
कतए बेचब कतएसँ आनब
पाइ नै रहत तँ कथी लऽ कऽ फानब।

आब अछि आशा अगिला जेठ
यौ अन्नदाता घटा दियौ अन्नक रेट
सभ काटि रहल एक-दोसरकेँ घेंट
केना कऽ भरतै सबहक पेट।

मनमे छल चाह
धियाकेँ करब बिआह

धऽ लेलक अकालक ग्राह
आब केना कऽ करब निरवाह
केना कऽ पढ़तै धिया-पुता
फाटल वस्त्र आ टुटल जूत्ता
देहमे नै बचल आब तागत-बुत्ता
दुआरिपर कनैत अछि भूखल कुत्ता।

सभमे परिवर्त्तन सभमे उत्थान
ठामहिपर अछि हमर गहुम-धान
धन्य हे ज्ञान धन्य विज्ञान
हमरो दिस दियौ एकबेर धियान
वएह खेत-पथार, वएह खरिहान
घरो छै टुटले कतए देखबै मकान
कतए बेचबै कतए रखबै धान
नै छै बजार नै छै गोदाम
वएह खाद-बीआ ओहिना पानिक दाम
वएह हड़-बड़द ओहिना बथान।

यौ सरकार करू जलक प्रबन्ध
फेर उठतै धरासँ धानक गन्ध
दमकल, नलकूपक करू उपए चन्द
धार-नदीपर करू तटबन्ध।

हम छी ऐ अंचलक किसान
देशक बढ़ेबाक अछि मान-सम्मान
बचेबाक अछि सबहक प्राण
भूखसँ दिएबाक अछि त्राण

हम करब संघर्ष नै छी बेजान
फेरसँ गाएब कृषि गान।
❍

घरक आँखि

रहै छलौं केतबो व्यस्त
देखबाक अभ्यस्त
ठमकि जाइत छल पएर
ठीक ओही स्थलपर सम्हारि
एकबेर झाँकि
घरक आँखि
मध्य ओ मोहक रूप
ठाढ़ भेल गुप-चुप
चित्र आँखिमे चमकि उठैत छल
मनक कण-कण गमकि उठैत छल
किछु दिनसँ भेल निपत्ता
बिनु देने अता-पत्ता
तैयो आदतिसँ लचार भऽ
ठाढ़ भऽ गेलौं शून्यमे ओहिना
जहिना पहिने छल तहिना।

ओ नै अछि
ई छी मनक खेल
ठमकि ठाढ़ भेल तकै छी
ई हमरा की भेल
की हमरा आँखिमे
हुनक बास भऽ गेल
आकि हमर आँखि ओ रूप मिलि
एकेटा अकास भऽ गेल।

अभ्यास

नै ऐपार नै ओइपार
खसल छी मँझधार
पानि अछि अगम-अथाह
मनमे निकलबाक चाह।

डुमैत भँसियाइत सम्हारि रहल छी
उनटा धाराकँ झमारि रहल छी
छूटि जाएत घर-पलिबार
टूटि रहल अछि मोह केर तार।

जरूरी छलै धीरजसँ सीखब
बूझि समझि मनमे लिखब
कछेरमे केने रहितौं हेलबाक अभ्यास
एना नै टुटैत हमर आस
पछताबासँ नीक
सोचब आगू की हएत ठीक।
❍

महफा आ अरथी

कारी आ उज्जर वस्त्र अछि पसरल
नापैत-जोखैत जा रहल छी ससरल
पैघ भेल जा रहल अछि दूरी
धेने कड़ी आ गोंतने मुड़ी।

ऊँच-गहींर आ समतल
नव-नव दृश्य बनए पल-पल
काठ-कठोर बनल हरपल
छन मात्र होइत अछि चंचल
टपैत देस-कोस
बनैत दुसमन-दोस
दुखमे होश
सुखमे बेहोश
काल जीत रहल अछि
उमेर बीत रहल अछि।

तैयो जोड़ैत घटी-बढ़ती
आगू शेष ऊसर-परती
कतबो नापब नै होएत
नापल धरती
महफा शुरू केलक
अन्त करत अरथी।
❍

काटैत बीआ

छुटैत निसाँस जेना निकलए जान
ऊपर ताकए खाली आसमान
नीचा डहि रहल पोसल बीआ
देखि-देखि फाटै छै हीया।

हँसुआसँ काटि रहल फसल केर सीना
देह भीजल अछि घाम-पसीना
करए पड़त आगूक आस
अपनहि काटैत लगाओल चास
थरथराइत हाथ जानैत अछि
बीआ रहि-रहि केना कानैत अछि।

हँसुआ कहै आ सुनै कान
फुलकी फुला गेल बहि गेल निशान
आब कि रोपबह हे किसान
जेतबे बोझ बीआ ततबे धान।
❍

कानैत हँसी

घटि गेल बीचक दूरी
गपसँ बेसी डोलैत मुड़ी।

किछु नै जानै छी
तैयो अपन मानै छी
एककँ सुख दोसराक सुख
दूनू मिलि भऽ जाइत अछि दुख
एक गोटेक आँखिक नोर
दोसरकँ दुखक नै ओर
भीज रहल अछि
अन्तरक पोरे-पोर
ई नै रूकत
कतबो लगाएब जोर
संचय कएल एक-एकटा कण
कतेक भरिगर भेल छल तन
निकलि गेलासँ आब
केहेन हल्लुक लगैत अछि मन।

माए एकदिन कहने रहए
साइत सभटा सहने रहए
बाटसँ भऽ कऽ कात
वएह भोगल बात
कहैत नीक अधलाह
फाटि कलेजा निकलै दाह
दू बून सूखल हँसी

नोर जल अथाह
कहलौं-सुनलौं भऽ गेल गप
एहेनठाम की करिते रहब तप
हे, रहै छी कतए कहाँ
गप केतौ नै बजबै अहाँ।

बिसरि थाल-कादोमे धँसल
कानैत-कानैत खिखिया कऽ हँसल
लवका शक्ति जागि गेल
हँसलासँ दुख भागि गेल।
❍

कन्हेपर भोलबा

हड़बिड़ों मचल अछि मेलामे
धिया-पुता हरा गेल ठेमल-ठेलामे
दूनू पच्छ अछि पूरा तगड़ा
शुरू भऽ गेलै मेलेपर झगड़ा
कोइ एँठ-कुठपर खसल
चिचियाइत कोइ भीड़मे फँसल।

मुँहपर डर नाचि रहल अछि
सभ अपने दुख बाँचि रहल अछि
के कोनए भऽ गेल निपत्ता
केकरो नै चलि रहल पत्ता।

“हे रौ सुन-ढोलबा
हरा गेल भोलबा
गाँजा पीबैत छन छलै सँगे
की कहबो, छौड़ा छै अधनंगे
तकैत-तकैत करए लगल दरद
कानि-कानि ओ करैत हेतै गरद।”

गाँजाक चिलम जेबीमे रखलक
आँखि उनटबैत ढोलबा कहलक-
“छौड़ा छह पाछू कान्हपर चढ़ल
तूँ जाइ छह आगू बढ़ल
निशाँमे अहिना हरेबह काका चिनाय
कन्हेपर भोलबा आ भोलबे नै।”

“बुधि हरा गेल हमर साइत
कन्हेपर भोलबा ओकरे ले औनाइत
कन्हेपर छौड़ा बैसल
बिसरि गेलौं डर छल पैसल।”

बजल बुढ़बा- छौड़ाकेँ दैत चमेटा-
“तूँ बेटा छेँ की टेटा
हमर मन भऽ गेल अधीर
कान्हपर बैसल छेँ भऽ कऽ बहीर।”

थप्पर लगिते उपजल आनि
छौड़ा बजल कानि-कानि-
“आँखि रहितो किछु नै सुझै छह
अपनाकेँ बड़ काबिल बुझै छह।”
❍

कुहेस

केतौ नै किछु बचल अछि शेष
चारूभर पसरल कुहेस
कठुआ गेल देह भीजल अछि केश
अधभिज्जू सन भेल सभटा भेष
घुरिया रहल छी ठामहि-ठाम
कियो नै देत अछि समैपर काम
टुटल जा रहल सभ आस
ऊपरसँ लगि गेल दिशाँस
कुहेस और भऽ गेल सघन
इजोत लगैत अछि टीका सन।

खेत-खरिहान, घर, जंगल-झार
सभटाकेँ गिंर गेल अन्हार
उनटि गेल अछि जेना माथ
छूटि गेल सभ संग-साथ।

नै भेटैत अछि बाट
नै अपन घाट
लगे-लग औनाइत
मन भेल उचाट
सभ गोटे धऽ लेने छी खाट
देखा दिअ जाएब कोन बाट।

कहिया फटत ई कुहेस
भेटत अपन घर परिवेश

हे सुरूज किरिणकेँ जगाउ
आबो तँ ऐ कुहेसकेँ भगाउ।
❍

जानवरक बोली

सुनहट बाट अन्हार भरल
अछि किछो गोंगिया रहल
देह थरथराइत मन डरल
भूत जकाँ के अछि अड़ल
सुनमसान अछि चारूभर
ने लोग आ ने अछि घर
जानवर ठाढ़ अछि आरि ऊपर
बाजि रहल अछि भऽ चरफर-
"हे यौ, जल्दी लग आउ
बोली सूनि नै घबराउ
कहब आब रहस्यक गप
बोलीक लेल बड़ड केलौं तप
अहाँ देलौं अपन बोली
हमर पूरा भेल आसा
नै घबराउ हम देब आब
अपन भेस-भाषा।"

जानवरक मुँहसँ मनुक्खक बोली सूनि रहल छी
अचरजमे डुमल अपने माथ धूनि रहल छी।
नै सुनब तँए कान मुनि रहल छी
विकासक क्रमकेँ गुनि रहल छी।
❍

उपयोग

हे यौ श्रीमान्, अहाँ छी अदभुत लोग
अहीं सँगे पौलौं हमहूँ सुख-भोग
भरल-पूरल रहल हमरो घोघ
भागल रहल दुखिया सोग
देखलौं एहेन-एहेन दोग
जे हमहूँ भऽ गेलौं बड़का लोग
जतए तक पहुँचलौं
ठीके नै छलौं ओइ जोग
किन्तु आइओ हम वएह छी
कहाँ भेलौं निरोग
जे छल अपन तेकरो लग
बनि गेलौं आब कुलोग।

काज पड़ल तँ ला ताकि कऽ
नुकाएल छौ कोन दोग
भऽ गेल काज तँ हटा तुरत
इहए छिऔ संक्रामक रोग।
आइ जनलौं कारण
की छलै असली रोग
अहाँ करैत रहलौं
हरपल हमर उपयोग।
❍

(ई कविता ''उपयोग'' श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ समरपित, राजदेव मण्डल...)

द्वन्द

अधरतिया भऽ गेल छै साइत
अखने पहुँचलौं बौआइत
सुनहट बाड़ीमे कोयलीक तान
श्वेत शिलापर बैसल अछि चान
आधा मुखपर केश-पाश
आधापर अछि नोर, निराश
तैयो आस-पास छिटकि रहल प्रकाश।

बिआहक बन्धन तोड़ि-ताड़ि
घर-पलिवारकेँ छोड़ि-छाड़ि
आएल अपने इच्छा
कऽ रहल हमर प्रतीक्षा
चिर प्रतिक्षित पियासल मन
कछ-मछा रहल तन छन-छन
केना कऽ राखब मनकेँ सम्हारि
अन्तरमे उठल आन्ही-बिहाड़ि।

बढ़ाएब हाथ अहाँ दिस
लोककेँ उठतै रिश
खुशीसँ भरत हमर मन
दुसमन सभ करत सन-सन
आपस घींच लेब हाथ
तँ समाज रहत साथ
अपने मनसँ हएत लड़ाइ
लोक करैत रहत बड़ाइ।

बाँहि पसारि बढ़ेलौं हाथ
तरेतर घुमि रहल अछि माथ
विमूढ भऽ अड़ल छी
द्वन्दमे पड़ल छी।
❍

छीपपर दीप

नमगर बाँसक छीप
पर नाचैत दीप
अपने देहकैं जारि-जारि
तैयो टेमीकैं सम्हारि
अन्हारकैं ललकारि
हवासँ करैत मारि।

एक्के धूनमे चलि रहल
समताक लेल गलि रहल
जेतबे क्षमता छै तेतबे
दोग-दागमे फैलि रहल
बटोहीकैं देखबैत बाट
हरा ने जाइ कहीं कुबाट।

देत प्रकाश सभकैं
लड़ैत अन्हारसँ भरि राति
किन्नौं नै देखतै केकरो
रंग, रूप आ जाति।
❍

इमानदारी

इमानदारी बिकैत छै बेनाम
लाख, करोड़ आ टका-छेदाम
सभ रंग दाम सभ रंग नाम
जेहने इमानदारी तेहने दाम
देहाती दाम शहरी नाम
जेहने टका तेहने काम।

इमान कहै सुनू हमर बोल
हमर के लगा सकैत अछि मोल
टूटि रहल अछि पुरना खोल
सहजहिं फूटत नवका बोल।

बेइमानी कठहँसी हँसैत अछि
ऊँच आसनपर वएह बसैत अछि
ओकरे भेटै आदर सम्मान
इमानदारी पाबैत अपमान।
हमहूँ नै बचल छी पूरा
लगल अछि बेमानीक धूरा
खोजलौं ऐ पार-सँ-ओइ पार
नै भेटल पूरा इमानदार
बजलौं अहाँ बारम्बार
कहू के अछि इमानदार?
❍

बीआ

बीआ नै अछि खाली बीआ
माटि, पानि, हवा प्रकाश
सँ मिलतै आस
छूबि देत अकास।

आँखि देख रहल अछि साँच
बीआ मध्य आँकुरक नाच
कालकेँ कऽ रहल जाँच
अन्तरमे बैसल गाछ
एक-सँ-अनेक पसरल
छेकने जाइत आगाँ ससरल
दैत अछि प्राण वायु
बढ़ैत अछि सबहक आयु।

किछु अछि बेसी
किछु अछि कम
अहीमे मिलल अछि
सत-रज-तम।

एकरा अन्तरमे शक्ति अपार
जाएत एक दिन धरतीक पार
बीजक प्रस्फोटन अछि सार
हरक्षण बनैत नव आकार।
❍

बलात्

घटना भेलै राति
अखने हेतै साइत
चौबटियापर पंचायत
दोषीपर खसतै जूता-लाति
ऊपसँ हेतै जुरमाना
लोक मारबे करतै ताना
बात बढ़तै तँ जेतै थाना
केहेन भऽ गेलै जमाना।

असगर केना कऽ निकलत लोक
राक्षस बैसल दोगे-दोग
जेकरा संगे भेलै बलात्
कानि रहल अछि भऽ कऽ कात-
"एकबेर असगरमे नोचलक गात-गात
सबहक सोझा कहए पड़तै वएह बात
केना की सभ भेलै हमरा साथ
लाज भरल बात केहेन अघात
फेर वएह पीड़ा सहए पड़तै
खोलि-खोलि कहए पड़तै
आँखि ने देखै भरल नोर
यौ आब कहिया हेतै भोर?"
❍

झूठक गियान

हमहीं देने रही झूठक गियान
बालपनमे धऽ लेलक कान
हमरे देल अछि ई सीख
कखनो झूठ होइ छै ठीक।

झूठ बाजि बचा लिअ जान
बढ़ा लिअ मान-सम्मान
घटि गेलै सत्यक मान
झूठकेँ धऽ लेलक कान
करए लगलै झूठक बेपार
बदलि गेलै काज बेवहार
धऽ लेलकै ओही दिन लीख
आब केना कहबे ई नै नीक।

झूठक गबैत यशोगान
भऽ गेलै आब ओ जुआन
हाथमे लेने तीर कमान
खींच लेत आब हमरे जान
ओ नै छी कियो आन
सोझा ठाढ़ अपने संतान।
❍

जेहने अहाँ तेहने हम

संगे-संग घुमलौं देश-कोस
कतेक विचारि लगेलौं दोस
दुनू गोटेमे भरल परेमक जोश
खुशी रहत पल छल पूरा भरोस।

सभ किछु छल एक्के समान
दूटा देह एकेटा जान
दोस बनबैत कात एतेक विचार
दुसमन बनबैत बखत भेलौं लचार।

नै सोचने छलौं अपना मन
जे बनए पड़त आब दुसमन सन
विचार कऽ बनाबितौं दुसमन
नै जरैत आइ तन-मन
दुसमनसँ कहाँ रहलौं कम
जेहने ओ तेहने हम
केकरोसँ कहाँ कियो कम।
❍

चिर प्रतीक्षा

नीपलौं-पोतलौं घर-दुआर
कतेक बेर केलौं झार-बहार
अपनो केलौं सोलहो सिंगार
कऽ रहल छी इंतजार।

उताहुल भेल मन
पिआसल अछि तन
बितल जाइत क्षण
कखनि हएत मिलन
मनमे फुलाइत सुमन
नमरले जाइत प्रतीक्षाक क्षण
असोथकित भऽ गेल नयन
शंकित छी बिफल हएत जतन।

निन्नसँ बन्न भेल आँखिक कोर
दुखाइत देहक पोरे-पोर
मन घेराएल सपनाक शोर
अहाँक झलक बुझाएल थोड़बे-थोड़
चौंकि उठलौं निन्न छल घोर
नै भेल छल भिनसर-भोर।

पएरक चेन्हसँ हम मानि रहल छी
अहाँ आएल छलौं से जानि रहल छी
पुन: एकबेर देहकँ तानि रहल छी
बाधाक निन्नकँ तोड़ि-ताड़ि
बौआइत सपनाकँ डाहि-जारि

खोलि अपन सभ घर-दुआरि
चिर-प्रतीक्षा तन-मन सम्हारि।
❍

हाथ

हाथ सिर्फ नै अछि हाथ
अन्हारमे जनमि गेल ऐमे
नाक, कान, आँखि, दाँत
इजोतेटा मे नै
अन्हारोमे रहैत अछि साथ।

सूँघैत अछि सभ कात
जानैत टेब-टेब सभ बात
हाथकेँ नै देखैत हाथ
देखैत अछि हाथक करामात।

कतए सँ कते धरि पहुँचल हाथ
हाथसँ मिलैत हाथ
सिरजनक साथ
भऽ जाइत अछि विध्वंसक बात
हाथ तँ अछि हमरे साथ
फेर किएक हेतै अधला बात।
❍

ठक

हम छी ठक
नै कोनो शक
झूठ गप भख
साँचक नै परख।

शुरूमे ठकलौं घर-परिवार
आगाँ ठकैत दुनियाँ-संसार
टका-पैसा हजारक-हजार
लगा देलौं सम्पतिक अमार
ठकैक आदतिसँ नचार
कतेको कनैत जार-बेजार।

आइ छूटल पूरा भक
जखनि हमरो लगल ठक
एहेन चीज पार भऽ गेल
जिनगी बूझू बेमार भऽ गेल
सभकेँ एहिना उठैत हेतै दरद
आइ हमहूँ करैत छी गरद
साँच कतए सँ आब हम पाएब
ठकबे करब वा ठका जाएब
सोचब कोनो एहेन उपए
ऐ जालसँ केना बचल जाए।
❍

शिशुक स्वर

बन्न परसौति घर
चिचियाइत शिशुक स्वर
निकलैत सुगन्ध
मन्द मन्द
शान्तिमे स्पन्द।

मधुर आवाज
सजौने साज
कनैत बारम्बार
खोलत अनन्त संभावनाक दुआर
बनत नित-नूतन सिरजनहार।

ऐ हेतु होए एहेन आधार
बढ़ै बुधि, विवेक, विचार
तत्काल चाही सुरक्षाक ढाल
देखू पाछू नचै छै काल
लेने छै वएह पुरना जाल
क्रन्दन स्वर पुछै सवाल-
"की हरण कऽ सकब अहाँ हमर दुख
देख रहल छी घातीक रूख
ताकि सकब अहाँ चिन्हल मुख
हएत कोनो मनुखे सन मनुख?"
❍

बोलती बन्न

अभिभावकक़ँ सीख कानकँ सुनाइत
हवामे चारू-भर गुनगुनाइत
"सम्हारि कऽ चलिहँ अपन चाल
नै तँ बाटेमे धऽ लेतौ काल।"

देश-दुनियाँ आगू बढ़ल
हम रहब ओझरा कऽ पड़ल
तैयो पैसल रहैत छल डर
काँपैत रहैत छलौं थर-थर
सुरक्षाक एतेक अछि समान
तँए ने देलिऐ गपपर धियान
आइ जाएत बे-वजह जान।

राह भेल अछि सुन्न-मसान
आगू ठाढ़ भेल जमदूत समान
कर्कश स्वर सुनि ठाढ़ भेल कान
"मुँहसँ जे निकलतौ आवाज
कियो ने देतौ अखनि काज।"

हमर की गलती किए भेल नाराज
आइ गिरत हमरेपर गाज
नजरि उठा देखलौं जी उड़ल सन्न
हमर भऽ गेल बोलती बन्न।
❍

दिलक आवाज

अन्तरमे रहैत अछि अमृत
बाहर बीख भरल अनघोल
प्रेमक नै कोनो मोल
भीतर शान्तिक खजाना अनमोल
दिलक बोलकेँ जारि-मारि
बजै छी हम दोसर बोल।

शब्द दैत अछि दिलकेँ धोखा
खोजैत अछि बारम्बार मौका
कखनो शब्द दिलपर होइत अछि नाराज
कखनो दिलक बात कहैत शब्दकेँ होइत लाज।

शब्द होइत जे दिलक आवाज
सभठाम होइत सत्यक राज
अन्तरमे बहुत सजबए पड़त साज
तखनि बनत शब्द दिलक आवाज।
❍

नेंगरा मजदूर

किएक फटकारै छी यौ दरबान
हम नै छी कियो आन
नै करू एना परेशान
नै छी भिखमंगा, चोर, बेइमान
बरख भरि पहिले हमरो रहै अहीं सन शान
हमहीं बनौने रही ई सतमहला मकान।

कतेक लगा कऽ लगन
काज केने रही भऽ कऽ मगन
अपन दुख किछु कहल ने जाइ
ऊपरसँ खसल रही दुनू भाँइ
टाँग कटा कऽ हमर बचल जान
सहोदराकेँ उड़ि गेल प्राण
नै छी दुखित केलौं निरमान
एहेन काजमे होइतै छै बलिदान
हमर तँ कर्तव्य अछि काजसँ लड़ब
किछु भऽ जेतै काज तैयो करब
देखबाक लीलसा छल एकबेर
आँखि जुरा जाएत रहब कनेक देर।

"भागि जो ऐठामसँ रे बकलेल
ई जगह अछि विशिष्ट लोकक लेल
मालिक एतौ तँ देख लेबही खेल
तुरन्तेमे चलि जेबही जेल।"

आँखि लगै छै केहेन क्रूर
जेना देहमे कऽ देतै भूर
चोटहिं घूमि गेल नेंगरा मजदूर
अछि चुप्पे आवाज निकलै दूर-दूर।
❍

मनक दुआर

अन्हार घरमे बैसल लोग
कऽ रहल अछि जेना कोनो जोग
नै देखि रहल एक दोसराक मुख
कतए सँ भेटत दरशनक सुख
औना रहल सभ ठामहिं-ठाम
बिनु मकसद जिनगी बेकाम
अन्हार करै अन्हारसँ बात
अन्हारेसँ झँपने रहू सबहक गात
अनठेकानी हँथोड़िया मारैत हाथ
नै जानि के करतै केकरापर आघात
शंकामे डूमल सभ काते-कात
डर नाचि रहल अछि माथे-माथ
कतबो करब छूच्छे जाप
अन्हार घरमे साँपे-साँप।

खोलए पड़त खिड़की-दुआर
अन्तर मनक सभ केबाड़
अन्हार भऽ जाएत तार-तार
पहुँचत प्रकाश आर-पार
एक दोसरसँ जान-पहचान
बढ़त आपसी मान-सम्माण।
❍

छाँहक रूप

हम छी अभागल
जा रहल छी भागल
निन्नमे डूमल या जागल
हरपल पाछाँ लागल
केहेन ई छाँह बिनु परबाह
लगैत अछि अथाह
अशोथकित भऽ गेलौं भगैत-भागैत
घूमि-घूमि पाछू तकैत-तकैत
मुँहसँ निकलैत अछि आह
केहेन अछि जिदियाह।

जखनि तक अछि ई काया
सँगे लगल रहत ई छाया
बेसी भागब तँ थकित हएत तन
ओझराएल रहत हरक्षण मन।

अड़ि कऽ परखब हम ओकर रूप
चाहे चढ़ि ऊपर चाहे खसि कूप
रूप हो कुरूप वा हो अनूप
ओकरे सँगे देखब हम अपन सरूप।
❍

बाबा केर लाठी

ठरल हवामे टौआ रहल छी
टोले-टोले बौआ रहल छी
बाबाक देल घण्टी गलामे टाँगने छी
गामक मुँहपुरखी हम नै कोनो माँगने छी।

घण्टी टनटनाइते भूकए कुकुर
लुच्चा छौड़ा सभ तकए भुकुर-भुकुर
हुनके देल छलै तेल पिआओल लाठी
दूध-भात खेबाक लेल फूलही बाटी
छुच्छे बाटी भटकि रहल अछि
सूखले भात अँटकि रहल अछि
लाठी हाथमे देखते लोक करए सन-सन
इशारा करैत बजैत अछि मने-मन-
''देखियौ देह हाथ सूत सन
लगै छै हाथमे बन्दूक सन।''

मित्र कहैत अछि-
''नै करू फर-फर
तामसे किए कँपै छी थर-थर
छै सभकेँ समानताक अधिकार
लड़बै तँ उजरि जाएत घर-दुआर
नै चलत आब पुरना लाट
ओ भऽ गेल कुबाट
एकर अछि एकटा काट
चलए पड़त आब नवका बाट।''

गीतक पूर्व संगीत

नै भेल दरस
तँ केना हएत परस
कहाँ जनलौं अहाँक प्रीत
पूर्वमे नै सुनलौं पद ध्वनि संगीत
हे यौ मीत
दूरसँ सुनलौं गीत
बुझलौं गीतक पूर्व बजै छै संगीत।

अहिना होइत हेतै नित
आब तँ अवधि गेल बित
कहाँ भेल हमर जीत
पहिने जँ जानितौं
एना नै कानितौं
आदरसँ अरियाइत आनितौं
छतीसो व्यंजन छानितौं
कतए चलि गेलौं भऽ कऽ अनेर
नै पाबि रहल छी अहाँक टेर
जेना टूटि गेल पुरना घेर
फेर जनम भेल एकबेर।
❍

दगध सुर

कलीकेँ स्वर सुनि
पिक भेल पागल
अन्तरमे किछु जागल
लेलक कान मुनि
मनमे गपकेँ गुनि
कली बजैत अछि अपनहि धुनि-
"मधुमासक आगमन भेल
अहाँ फँसि गेलौं कोन खेल
हृदय केना बिसरि गेल
के बनौलक एहेन जेल
जतए चलैत अछि फरेबी खेल
हमरा बना देलौं बकलेल
आकि अहाँ बनि गेलौं सन्त
वियोगक दाहसँ दग्ध छी कन्त
साँचे अनन्त अछि वसन्त
किन्तु हमर नै देखब अन्त।"
❍

इजोतक वस्त्र

घर-दुआरिकेँ नीप
हाथमे लेने जरैत दीप
अन्हारसँ लड़बाक इच्छा
कऽ रहल समैक प्रतीक्षा।

हवाक झोंका कऽ रहल खेल
दीया अपनाकेँ बचेबाक लेल
आँचर तर ढुकि गेल
जेना इजोत वस्त्र बनि गेल
आँखिकेँ असंख्य दीप सुझाएल
जे छल मुझाएल
बाट अछि असीम, अपार
अड़ल चारूभर अन्हार
एक दीप अछि ज्वलित
तँ करत अनेकोकेँ प्रज्वलित
नेसि रहल धेने इहए आस
ठामहि-ठाम खेलत उजास।
❍

मनुखदेवा

सभ मनहि-मन पूजि रहल अछि
एक-दोसराक गप बूझि रहल अछि
मनक केना बूझत सभ बात
कहए चहैत अछि छूबि कऽ गात
पकड़लक पएर भऽ कऽ कात
हमरो दुख सुनि लिअ तात
जखैने देवक देहमे भिरल
ठामहि ओ ओंघरा कऽ गिरल
जेकरा कहै छलौं महान
से अपनहि अछि बेजान
आब के देत सुन्नर काया
सम्पति, यश, सम्मान।

खूगि गेल सभटा राज
तैयो भीतरसँ निकलए आवाज-
"छलै जे पावन
बना देलिऐ अपावन
भऽ गेलै निष्प्राण
छुबलासँ घटि गेलै मान
पहिने बनल छल देवा
आब भेल मनुखदेवा
देह चढ़ि करत सेवा
भेटत सभकेँ मनक मेवा
नै डेराउ सभ किछो देत
मानत नै पूजा अखनो लेत।"
❍

अप्पन हारि

गाम-घरसँ मंत्री दरबार
कियो नै पाबि सकैत छल पार
के बजत सोझा फोड़ि देतिऐ कपार
डरे कनैत कते जार-बेजार
जीतने छलौं सकल समाज
उठिते आवाज गिरबै छलौं गाज
बड़का-बड़का केलौं काज
बजितो होइत अछि लाज
सभ दुसमनकेँ मारि देलौं
कतेकेँ माटि तर गाड़ि देलौं
घर-परिवारकेँ तारि देलौं
तैयो अपनासँ हारि गेलौं।

अपन उजाड़ि
काटए बपहारि
के बजैत अछि
अप्पन हारि?
❍

स्वरक चेन्ह

स्वर आबि रहल आकाशक कोनो छोरसँ
दरद उठि रहल देहक पोरे-पोरसँ
अहाँक सोर पाड़ब हम सुनि रहल छी
असंख्यमे सँ अहाँक स्वर चुनि रहल छी।

टपब खेत-खरिहान देश-कोस
मनमे अछि मिलन केर जोश
बियावान झाड़-पहाड़
नदी-नालाकेँ करैत पार
पहुँचब एक दिन अहाँक पास
लगौने छी मनमे आस
स्वरक चेन्ह अछि ठामे-ठाम
नै बिसरब आब अहाँक गाम
किएक भऽ रहल छी अधीर
मनमे उठैए रहि-रहि पीर
हएत शुभ मिलन रहू थीर
बरसत एक दिन शान्तिक नीर।
❍

सुखक भाय

तोड़ि रहल छी फूल
गड़ि गेल हाथमे शूल
भऽ रहल केहेन स्पर्शक सुख
हाथमे गड़ल काँटक दुख
नै छोड़ि सकै छी
आ ने तोड़ि सकै छी।

चलैत जिनगीकेँ नै मोड़ि सकैत छी
विचारक क्रमकेँ जोड़ि सकैत छी
फड़तै अलग-अलग फल
किन्तु एकेटा उद्‌गम स्थल
सुख आ दुख दुनू छी भाय
रहत सँगे नै छै उपाय।
❍

हएत अगारी

सभ खेलै छलै अपन-अपन खेल
नै छलै केकरो आपसी मेल
सभ चलैत छल अपन-अपन चाल
अपने समांगपर फूटै छलै गाल
लोकक सिखऔलपर तोड़ैत छल ताल
सबहक भेल छलै हाल-बेहाल
कतेक प्रयास कतेक नोकसान
तब देलक हमरा गपपर धियान
बनल एकता कतेक छान-बान्ह
बालुक बान्ह कोन ठेकान
खुश भऽ सभ ठोकए लगल ताल
चुप्पा नेता भऽ गेल वाचाल
ओझरा कऽ फँसल ओ लोभक जाल
ठाढ़ भऽ गेल कठिन सवाल।

फेर बनलौं एकबेर बकलेल
जखनि नेते स्वार्थी भऽ गेल
पुन: ताकबै खेल रहतै जारी
जे नै भेलै से हेतै अगारी।
❍

रूचिगर

केहेन चीज अहाँक लगत नीक
हमरा भेटत ओहीसँ सीख
दौगैत रहैत अछि तन
अन्वेषण करैत मन
विचरण करैत धरासँ गगन
पैघ पहाड़ आ कण-कण
कतेक बहैत अछि नोर
राति-दिन आ साँझ-भोर
डुमैत रहै छी अपने भूख
तब देखबै छी अहाँक दुख
कल्पनामे देखैत छी भऽ कऽ मूक
परोसैत छी अहाँ लग सुख
तैयो भऽ जाइत अछि चूक
कहाँ बदलैत अछि अहाँक रूख।

आब देखेबाक अछि मृत्यु-चित्र
ओ हएत केहेन विचित्र
ऐ देहकैँ छोड़ए पड़त यौ मित्र
तब बना सकब ओ चित्र
घेरने अछि मोहक कड़ी
बितल जाइत घड़ी-पर-घड़ी
अहीं छी असल प्रहरी
तोड़ू कड़ी तोड़ू कड़ी।
❍

बजैत एकान्त

बजैत अछि सुन-मसान
कियो ने दैत अछि कान
गबैत रहैत अछि अनवरत गान
जुग-जुगसँ संचित ज्ञान
चारू भर स्वरक घमासान
सुनहट ठाढ़ अपनहि शान
हरक्षण दैत अनुपम दान
बिनु शब्दक बजैत ज्ञान।

स्वर सुनैत छी किन्तु अछि चुप
केहेन हएत स्वरूप
वाणी अछि एतेक मधुर
तँ रूप हेतै केहेन अनूप
बैसल छी एकान्तक कोड़मे
भऽ रहल सर्जना मनक पोर-पोरमे।

यादि अबैत अछि करम
टूटि रहल बहुतो भरम
सुनि रहल अछि हमर कान
शान्तिक गुन-गुन गान
बरिस रहल सुन-मसान
कऽ रहल छी पावन स्नान।
❍

लटकल छी

दुनू हाथ अछि कड़ीसँ बान्हल
ओहीपर हम अँटकल छी
पएरक नीचाँ उधिआइत समुंदर
आसमानमे लटकल छी।

छड़पटेलासँ हाड़-पांजर दुखाइत अछि
बेसी चिचिएलासँ कंठ सुखाइत अछि
कहुना कऽ जीब रहल छी
जिनगीक जहर पीब रहल छी
नीचाँ गीरब तँ डूमि मरब
तँए की हम लटकले रहब
आब नै मानब
जेकरा नै देखने छी
तेकरो जानब
बन्हन तोड़ि नीचाँ फानब।

नै डरबै कठिन कारासँ
लड़बै वेगयुक्त धारासँ
करबे करब पार
उधियाइत तेज धार
देख रहल छी समुद्रक कछेर
तोड़ए पड़त आब कड़ीक घेर
जेकरा करबाक चाही सवेर
तेकरे केलौं अबेर।

बटमारिक गीत

किएक कऽ रहल छी
एना ठेमम-ठेल यौ
हम नै छी बकलेल यौ।
जहूक लेल हम छी जोग
तहूसँ भेल छी अभोग
किए ने भेट रहल अछि
जगह हमरो लेल यौ
हम नै......।

हमरो मन छल गबितौं गान
घटले जाइत अछि मान-सम्मान
कष्टमे रहत जँ मन-प्राण
कतएसँ गाएब सुख केर गान
दुखसँ नाता अछि
आब हमर जुड़ि गेल यौ
हम नै......।

हमरा लेल जगह नै खाली
व्यंग्यसँ बजबैत अछि सभ ताली
असली-नकली करिते-करिते
हमहीं बनि गेलौं पूरा जाली
हमरा सँगे चलि रहल
ई कोन उनटा खेल यौ
हम नै......।

अहाँ कहै छी- ‘‘धरू आस
करू बारम्बार प्रयास
एक दिन करै पड़तै
अहूँसँ ओहिना मेल यौ
नै रहब अहाँ बकलेल यौ।’’
हम नै......।
❍

गन्तव्यक भरम

मन भऽ गेल पुलकित
गाबए लगलौं गीत
मिलि गेल मंजिल
भऽ गेल हमर जीत।

जेकरा बुझलौं मंजिल
ओ कहलक-
"अहाँकेँ नै अछि अकिल
लटकल छी अधरमे
फँसल छी भरममे
जेकरा ताकैले एते प्रयास
से धेने अछि अहींक आस
किएक बखतकेँ करै छी नाश
ओ तँ अछि अहींक पास।"
❍

दरदक भोर

अखन तँ भेलै दर्दक भोर
साँझमे देखबै अन्तिम छोर।

चिचियाइत मन करै शोर
कानब तँ सुखि जाएत नोर
तानब तँ छूटि जाएत जोड़
डरे धेने छी केकर गोड़
थाह नै भेटए थोड़बो-थोड़
ताकब दरदक अन्तिम कोर
छोड़ि देत ओ हमर पछोड़।
❍

केहेन मांग

असली मांग
बजल अर्द्धांग
“जिनगी भरि बनले रहब बताह
काटिते रहब हम कठ आ काह
पलिवारक नै अछि परबाह
डूमि जाएत आब घरक नाह
जरि गेल सभ मनक चाह
केना कऽ चलब काँट भरल राह।”

करै छी जौं गपपर विचार
मन बहैत अछि तेज धार
तँए, पटियापर पटुआ गेलौं
लाजे कठुआ गेलौं।

केना करब एकरा सम्हार
पाबि नै रहल कोनो पार
रखबाक छै सबहक मान
करए पड़त एकर निदान।
❍

पसरैत प्रशाखा

जर्जर बूढ़ अनचिन्हारक गाछ
हवा नचा रहल छै नाच।

लटकल असंख्य डारि-पात
चारूभर आ काते-कात
सहने हएत कतेक अघात
केतेक छूटल केतेक साथ
करैत एक दोसरसँ बात
परेमसँ भेल स्नात।

हमर चलैत अन्तिम साँस
स्वजन-परिजन आस-पास
एकेटासँ बढ़ि केतेक रास
सँगे चलैत सिरजन विनाश
झूठ-साँच मध्य नचैत नाच
हम बनल छी अनचिन्हक गाछ।
❍

खसैत बुन्द

खसैत बून-बून
गाबै गुन-गुन
चिड़ै चुन-चुन
झिंगुर झुन-झुन
बरसैत मगन घन
देखैत मन नयन।

नाचैत सुमन मन
तृषित भीजैत तन
सूखल कण-कण
अमृतसँ मिलन।

चलैत रहत आखेट
नै टुटत जिनगीक गैँठ
आबि गेल जेठ
दुख गेल मेट
सभ किछु समेटि
आब हएत भेँट।
❍

उलहन

“सभ तँ रहै छै अहींक लग-पास
हम तँ अबै छी चासे-मास
पड़ि गेल विपति भेलौं निराश
अकालक कारणे डहि गेल चास
दिन अदहा पेट राति उपास
मनमे छेलए जे पूरा हएत आस
भौजीक ताना सुनि आँखि भरल नोर
बेथासँ भरल मनक पोर-पोर
एक मुट्ठी देलासँ की भऽ जाएत थोर
आँखिसँ बहि रहल अछि दहो-बहो नोर
हमर नोर नै बनि जाए अँगोर
यौ भैया, एकदिन हमरो हेतै भोर
चुप्पी साधने खसौने छी घाड़
ऐ सम्पतिपर छै हमरो अधिकार
आगूमे ठाढ़ बालपनक पियार
नाता तोड़ि केना करब तकरार
कनैत जा रहल छी जार-जार
माए रहैत तँ करैत दुलार
अपने चास-बासपर करए पड़त आस
बाबाक बखारी आ धीयाक उपास।”
❍

आपसी

“जिनगी भरि दैत रहलौं फूल
आपस भेटि रहल अछि शूल
मन भऽ गेल बियाकुल।”

“किए भेटल ई डण्ड
कहाँ केलौं कोनो भूल
देहलो चीज नै देब
हम देने रही फूल
काँट केना लेब?”
“हमरा लग वएह अछि तँ दोसर की देब
जबरदस्तीओ करब तँ आरो की लेब।”
खुगि रहल अछि मनक राज
सुआरथसँ भरल छल हमर काज।
❍

मोँछक लड़ाइ

छोटका मोँछ
मोटका मोँछ
सोझका मोँछ
टेढ़का मोँछ
पकल मोँछ
अधपकल मोँछ
बघबा मोँछ
बिलरबा मोँछ
कारी-कारी ऐँठल मोँछ
तितली सन बैसल मोँछ
झबरा मोँछ
लबरा मोँछ
पुरनका मोँछ
लबका मोँछ
भड़कल मोँछ
फड़कल मोँछ
मोँछक शान
गामक गुमान
तोड़ै तान
फाटै कान
जेतेक रंगक मोँछ
तेतेक रंगक झगड़ा
झगड़ा ताकै
घूमि-घूमि रगड़ा
मोँछ गाबए बेवहारक गान
अपने जिनगी अपने जुबान।

''हम नै लड़ब
लड़त के आन
हमरेपर अछि
गामक शान
हमहीं बँचाएब
सबहक जान
सबहक दोकान
सबहक माकन
सबहक आन
सबहक गियान
छूटत जखनि हमर बान
कियो ने करत कल्यान
हमरा सोझहा आनक बड़ाइ
तँ चलिते रहत मोँछक लड़ाइ।''

मोँछ-सँ-मोँछ लड़ए
कियो जीतै कियो मरै
केते घर जरए
तब केते तरए।

''की यौ भाय
करिते रहबै
मोँछक लड़ाइ
सभ किछु भऽ गेल नाश
किछु ने रहि गेल पास
लटपटा गेलै सभ लगे-पास
केकरो ने बढ़बाक आस

ओझरा कऽ छी पड़ल
अदहा छी मरल
आब तँ मोँछो अछि झड़ल
आगू बढ़बाक नै अछि उपए
की यौ भाय,
करिते रहब मोँछक लड़ाइ
आबो ने करब कोनो उपए?''
❍

दूटा धारा

अपनो ने पाबि रहल छी पार
अंतरंग नदीमे दूटा धार
बिनु एकाकार केना करब पार
केना कऽ पकड़ब असल आधार।

केतेक पैघ अछि अवरोध
किए ने भऽ रहल अछि बोध
केना कऽ धारा हएत तेज
बाधाक ने बँचत कोनो रेख
अपन दोख अनका माथपर राखि
टकटक चारूभर रहल छी ताकि
भेटि ने रहल अछि कोनो उपाइ
जिनगीओ ने कहीं अकारथ जाइ।

झूठे धेने छी अनकार आस
अनकर आस रही उपास
अप्पन आस तब बिसवास
करए पड़त अपने प्रयास।
❍

चोरि

बेइमानीसँ नाता जोड़ि
भरिगर अवरोधकेँ तोड़ि
असली मनुखक लक्षण छोड़ि
हमहूँ केलौं एकबेर चोरि।

देखलक हमरा लग धन
सबहक बदलि गेल मन
शुरू भेल मालक कमाल
बदलि गेल सभटा चाल
किछुक आँखिमे देखै छी रिश
मनमे उठए लगैए टीस
मूनि लइ छी चटदनि कान
तोड़ए लगै छी अपन तान
बढ़ि गेल आब हमरो शान
लोक कहए लगल महान।

अंतरसँ जखनि उठए अवाज
खुगए लगैए सभटा राज
आँखिक भीज जाइत अछि कोर
भीतर शोर चोर-चोर।
❍

परिस्थिति

केतेक अबैत जाइत लोक
सबहक मुँहपर नचैत शोग
पिताक अंतिम दर्शन लेल
चलि रहल समाजिक खेल
केतेको मुँहपर असली दु:ख
केतोकोकेँ छुच्छे बजबाक भूख।

''लेधुरिया छै धिया-पुता
अपना देहमे नै छै बुत्ता
पड़ल छेलै बेमार
खसौने रहै छै घाड़
समए काटब भऽ जेतै पहाड़
केना कऽ लगतै पार
केहेन भऽ गेलै अधला स्थिति
घेरि लेलकै चारूभरसँ परिस्थिति।''

आ हम छी ठाढ़
परिस्थितिसँ भऽ कात
जेतए ने कोइ छूबि सकए
आ ने रहए साथ
नै छी एकोरती खिन्न
हम छी परिस्थितिसँ भिन्न
ने जागल छी आ ने सूतल छी
सपनामे छी लीन।

काव्य कथा-

डोलनी डाइन- १

चारि-पाँचटा घसबाहिनी
छीटा भरने घास छिल-छिल
फुस-फुसा कऽ गप करैत
नजरि मिलिते हँसै खिल-खिल।
एक गोटे घास राखि
बजल गाम दिस ताकि-
"गै, जल्दी चल ऐठामसँ
बात ले हमर मानि
आबि रहल छौ गाम दिससँ
डोलैत डोलनी डाइन
नचैत दुपहरिया रौद
बाधमे नै छै एकोटा लोक
एहने सुनहटमे होइ छै
जंतर-मंतर जाप-जोग
एम्हरे आबै छौ
चट दऽ उठा ले घास
निकल ऐठामसँ पट दऽ
नै तँ चलि एतौ पास।"

सबहक मुँहपर डर लगल नाचए
डाइन-जोगिनक कथा मन जेना बाचए।

एकटा घसबाहिन उठल देह तानि
हाथमे हँसुआ लेने, बजए लगल फानि-फानि-

“केते देवे सेवे भेल छेलै एगो संतान
तेकरो छूटि गेलै परसूखन परान
लहासकेँ गाड़ने छै धारक कोरपर
हमरे बड़का कित्ताक अन्तिम छोरपर
आइ उखारतौ ओही लहासकेँ
तब भेटतौ एकरा चैन
दुपहरियामे आबि रहल छौ
तँइ झुलैत ई डोलनी डाइन
सभ गोटे नुका रहब धारक कातमे
डर नै हँसुआ रखने रहब हाथमे
आइ भइखौकीकेँ
देखबै सभटा कुकरम
दस लोकमे कहबै
तब हेतै एकरा लाज-शरम
नै छोड़बै एना
करेबै पंचसँ जरिमाना।”

सबहक भऽ गेलै एक विचार
तुरत्ते सभ भऽ गेलै तैयार।
❍

डोलनी डाइन- २

घसबाहिनी सभ कऽ देलकै अनघोल
सुनै सभ अचरज भरल बोल।
“जेकरा नै छै बिसवास
उ कऽ लिअ जाँच
अपनेसँ देखि लिअ
ई गप छै साँच
डोलनी डाइन करै छै नँगटे नाच
चढ़ि कऽ हाँकै जीते गाछ
लहासक साथ धारक कात।”
डर नाचै सबहक माथपर
मुड़ी डोलाबै एक-दोसराक बातपर
गामक फरेबी और उचक्का
करए लगल सभ घोल-फचक्का
औरतिया सबहक अलगे ताल
आँखि नचाबैत बनल वाचाल।

“अनकर जा बच्चाकेँ
खाइत नै होइ छै डर
अपना-अपना धिया-पुताकेँ
सबेरे घर कर।”
गामक पंच आब की करतै
बढ़ि गेलै बात तँ बजै पड़तै।

“हौ, देखबा-सुनबामे छेलै बड़ नीक
तरे-तर की छै तेकर कोन ठीक

एना छोड़ि देलासँ
समाज भऽ जेतै उदंड
एकरा भेटबाक चाही
ओहने कठोर डंड
जइसँ टूटि जाइ एकर घमंड
थर-थरा जाए सभ देखि कऽ डंड।”

सौंसे गाम भऽ गेलै बिढ़नी बान
खबरि पसरि गेलै काने-कान
पंचैती बैसतै डिहबारक थान
साँझेमे देखि लिहक पंचक तान।
❍

डोलनी डाइन- ३

दू परानी मिलि केते करतै काम
जखनि करमे भेलै बाम
सासु-ससुरकँ पहिने लेलकै छीनि
तब भेलै भिन्न
दियाद बनि गेलै दुसमन
झगड़ा लेल करै फन-फन
छीनि-झपट शुरू केलक
की अपन की आन
समैक फेरी लगिते
सभ भऽ गेलै बेइमान
ऊपरसँ पति भऽ गेलै बेमार
के करतै घर-बाहरक कारबार।

करैत-करैत डोलनी परेशान
अदहा बँचल छै माथा
अदहा तनमे जान
असगरोमे गप करै
सोर पाड़ने बने अकान
लोक कहै- गुणघिच्चू डाइनक
इएह सभ छी पहिचान।
❍

डोलनी डाइन- ४

नै छेलै एक्कोरत्ती बिसवास
पाँच बरिसपर पूरा भेलै आस
जनमलै एकटा पूत
लगै छेलै जेना मुरुत
किन्तु बात भेलै अजगुत
सुतलेमे छूटि गेलै ओकर परान
डोलनी फेर भऽ गेलै निसंतान।

लोक कहै-
"हमर गप ले मानि
बेटा दऽ कऽ सिखलकै डाइन।"
बपराहड़ि काटैत डोलनीकेँ
बन्न केलक घरमे
पाँच गोटे लहास उठौलक
कान्हपर धड़फड़मे।

चिचियाइत बजल डोलनी घरसँ
कलेजा फाटल जाइ छेलै तरसँ-
"हौ बाप लेने जाइ छहक हमर धन
एक्कोबेर मुँह देखब भरि मन
काजक पाछू रहलौं बेहाल
तब ने भेल हमर एहेन हाल
कहियो भरि नैन देखियौ ने भेल
आब तँ सुगना उड़िओ गेल।"

कियो ने बुझलकै दिलक दरद
गाड़ैले चलि पड़ल सभटा मरद

फाड़ि कऽ देखल जा सकैछ खीरा
मुदा के जानतै परसौतीक पीड़ा
कियो नै केलक ओकर कहल
टुटल खिड़कीसँ ओ देखैत रहल
सभ मिलि लऽ गेलै
लहासकेँ धारक कातमे
ओकर पति मनधत्ता
रहै संग साथमे।
❍

डोलनी डाइन- ५

उ साँझ केतेक कारी बुझाइ छेलै
सबहक मन भारी बुझाइ छेलै
बााध-बोनसँ लोक
सबेरे गेल छेलै भागि
पंनचैतीमे बैस गेल छल
दोग-दोगसँ आबि।

तखनि घटि गेलै फेर एगो घटना
मरि गेलै फनकाक बेटा
नाम रहै मटना
छौड़ाक छेलै पहिनौंसँ कसरि
दबाइओक नै पड़ै छेलै असरि
नै छेलै बेमारी गप छेलै आन
डागदर बुत्ते कतएसँ बँचतै परान।

आबिते फनका फनकए लगल-
''हौ बाप हमहीं छी अभागल
मनधतो छै ओकरे साथ
कहलौं ई बात
तामसे बजल भऽ कऽ कात-
'बात बाजी सोचि
नै तँ मुँह लेबौ नोचि।'
डोलनी आबै छेलै हरदम अँगना-घर
हमरा बेटाकैँ खा गेलै बनि चरफर
कहि दियौ हमरा बेटाक घुमा देतै परान
नै तँ लाठीसँ पीट कऽ खैंचि लेबै जान
हमरो नाम छी फनका नै छी कियो आन

जे कहब से कऽ देबै स्थानमे दान
नै तँ संग दिअ ओकरा मारि देबै
जीतै आगिमे जारि देबै।''

दोसर-तेसरकेँ नीक लगल
चारिम फट्ट दऽ बजल-
''एना अनचित केना होइ छै करल
सबहक अँगनामे छै बेदरा भरल
केकर लेतै जान
तेकर कोन ठेकान।''

सुनि-सुनि सबहक बातपर
तामस चढ़ि गेलै पंचक माथपर
''कहाँ छौ मनधता ऐठाम बजा
आइ देबै ओकरा कठोर सजा
किए कुड़िएतै जौं नै रहतै फोंसरी
नै रहतै बाँस नै बजतै बौसरी।''

अन्हरिया भरल चारूकात
सुनिते पंचक बात
थर-थरा गेलै गात
पाछू ठाढ़ छेलै मनधता
ओहीठामसँ भऽ गेलै निपत्ता।
❍

डोलनी डाइन- ६

दौगते अँगना आएल मनधता
थर-थर काँपैत पोर-पोर
लगमे सोर पाड़लक डोलनीकेँ
मन छेलै भेल अघोर।

"पहिने तँ सभ कहै छेलौ
तोहर बड़-बढ़िया छौ बानि
की केलही टोलक लोक संग
जे सभ कहै छौ ई छै डाइन
साँचे उखाड़ने रही बेटाक लहास
नँगटे नचैत रही ओकरा पास
ठीके डाइन सिखौलकौ तँ देलही बेटाक जान
मटनाक तोहीं खैंच लेलही परान?
नुकाएल छीही घरमे मुइन कऽ कान
पंच सभ कऽ रहल छौ घमासान
मटनाक बाप लऽ लेतौ परान
आइ जिते झड़का देतौ
गरम तेलमे कड़का देतौ।"
गप सुनि डोलनी भेल अधीर
बजए लगल, मन केलक थिर।

"हे, हमर बात सुनू धियानसँ
आइ तँ जेबै करबै जानसँ
बात लिअ मानि
हम नै छी डाइन
घसबहिनी सभ उड़ौलक अफवाह
बौआकेँ देखबाक मनमे रहै चाह

बन्न घरमे कटैत रहि गेलौं काह
कियो ने केलक परवाह
छेलै ई बड़का सेहन्ता साइत
पूरा नै करितौं तँ घुन जकाँ खाइत
बित जाइत जिनगी
छूटि जाइत परान
आन तँ होइ छै आन
नै देखितौं मुँह अप्पन सन्तान।

साड़ी खोलि कऽ राखि देने रही कात
किछु लगि जाएत तँ भऽ जाएत बेबात
उखाड़लौं बौआक लहास
कियो ने रहए आसपास
तेल-काजर लगा देखलौं भरि नैन
भेटल मनमे पूरा चैन
फेर मनकें साधि
गाड़ि देलौं ओही खाधि
जखनि अहाँसँ टुटत आस
हम भऽ जाएब जिनगीसँ निरास
गै माए, आब जीबै कोन आस
अहूँकें नै हमरापर बिसवास!"

बजल मनधता बहबैत नोर-
"हमरो बात सुनि ले थोर
कहाँ छौ मोटरी-चोटरी
कहाँ छौ गहनाक पोटरी
थम लाठी लिअ दे
पानियाँ एकघोंट पिअ दे

गिरेतौ पाग
गै भाग-भाग
आबि रहल छौ
फोंफियाइत नाग।''

डोलनी बजल-
''हमरो होइए पूरा शक
दुआरि दिस लगौने हएत टक
पछुआर दिस भागब नीक
हमरा बुझाइए यएह ठीक।''

दुनू परानी साथे-साथे
भागल जाइत अन्हरिया माथे
दुखित भेल छै मन
डरे थर-थरा रहल तन
बाटक नै कोनो ठेकान
मुट्ठीमे लेने छै जान
पाछूसँ अबैत हिंसक लोक
भागि रहल अछि दोगे-दोग।
❍

डोलनी डाइन- ७

टपैत बाध-बोन, ऊँच गहींर
गड़ल काँट-कुश होइ छै पीड़
भागले जाए रहल बनल बहीर
पाछू नै ताकै मन भेल अधीर
टाँग कटल आ ठेहुन फूटल
अपन गाम घर सेहो छूटल
बनि गेल अछि अभागल
अन्हारे संग जाए रहल भागल।

"के छी ठाढ़ रह ओहीठाम
आगू बढ़मए तँ कियो ने देतौ काम।"
दुनू चमकि गेल
पएर ठमकि गेल।

"आब की करब
लड़ब वा मरब
ई केकर छी अवाज
केनएसँ आबि रहल छै गाज
चोर-डाकू छै आगूसँ घेरने
आबि रहल आगाँसँ रेड़ने
आब नै कोनो बँचलौं बाट
आगूमे लगि गेलौ बड़का टाट
इज्जत, जान दुनू चलि जेतौ
ऐठाम आब कियो ने बँचेतौ

तोरे खातिर आइ हमरो जेतौ परान
तोहर चलि जेतौ इज्जत-मान।''

डोलनीक हाथक हँसुआ चमकल
हँसुए जकाँ आँखिओ दमकल
''अहाँक देहमे कियो भिर तँ लौ देखि
ओकर नै बँचए देबै एक्कोरत्ती रेख।

यएह छी पुरुखक समाज
केना कऽ बँचतै स्त्रीक लाज
ऐ पंच-समाजसँ होइ छै बड़को-समाज
एक दिन खुलि जेतै सभटा राज।''

दुनू अछि पूरा तैयार
मारि देबौ आकि मार
नै तर्क वितर्क
दुनू भेल सतर्क।

हवाकेँ गिन रहल अछि
समैकेँ चीन्ह रहल अछि
भारी भऽ गेल संगी-साथ
लाठी कसि पकड़लक हाथ।

देखलक मनधता
आइ चललै असली पता
बाघिन गरजि रहल अछि
नव कथा सिरजि रहल अछि
खुगल आँखि आ खुगल कान
दुनूक अलग-अलग पहचान

हरहरा रहल हवा कान
ऊपर उगि रहल अछि चान।
❍

उड़ैत अकास

ससरै छेलौं साँप सन
उठैक भेल मन
केलौं केतेक जतन
उठि गेल एक दिन सम्पूर्ण तन।

सम्हरि-सम्हरि चलैक जोग
भेटल केतेक नव-नव भोग
दौगैक केलौं अभ्यास
नव आस नव-नव बिसवास
नपलौं धरती-परती केतेक रास
बढ़ले जाइत अछि गति मासे-मास
करब जखनि हम पूर्ण अभ्यास
गन्तव्य अछि हमरा आस-पास।

दौग सकत जँ ससरैत देह
किएक ने बनि सकैत छी मेह
कहिया हएत उड़ैक इच्छा
स्वच्छ अकास कऽ रहल प्रतीक्षा।
❍

स्वरमे बास

एक दिन आएल रही अपने काम
सुनने रही अहाँक नाम
कल्पित छल जे मनमे रूप
दरस भेल छल अधिक अनूप।
मनमे उठैत रहल आह
परबशताक बेड़ीमे कटैत काह
जाए पड़ल दूर संग रहल छाह
पुन: एलौं, नै छेलौं बेपरबाह
केतौ ने चलि रहल पता
अहाँ केतए भऽ गेलौं निपत्ता।

लोक कहैत अछि-
अहाँ उड़ि गेलौं आसमानमे
डूमि गेलौं शून्यक महागाणमे
खोजि रहल छी बेर-बेर आबि
बेचैन छी दरस नै पाबि
ताकि रहल छी मेघ बनि अकासमे
अहाँ निश्चय हएब अहीठाम आस-पासमे
जे स्वर हएत लग-पास
ओहीमे हएत अहाँक बास
अहाँ नै भेटब किन्तु भेटत अवाज
जे खोलि देत अहाँक सभटा राज।
❍

डायरीक पन्ना-१

बनेलौं एकटा महल
जइमे छुच्छे पैसा गहल।

खन-खन पैसाक खनक
शान्ति उड़ि गेल सुनिते झनक
परेम किए दुख सहत
ओ किएक असगरे रहत
दुनू भागि गेल
हमर सुतल आँखि जागि गेल
मात्र पैसा खन-खना रहल अछि
हमरा पाछू गनगना रहल अछि।

राति-दिन केने परेशान
अकच्छ भऽ गेल हमर कान
सुतलोमे सुनैत छी वएह तान
जगलोमे निकलए जान
तँए हम भागि रहल छी
किन्तु, कहाँ जागि रहल छी?
❍

डायरीक पन्ना-२

एकर की होएत जाँच
ई तँ पूरा-पूरी छै साँच
तँए ने भेल बेपरवाह
नै चाही कोनो गवाह।

यौ सुनि लिअ राज
ऐसँ नै चलत काज
केहनो अछि बात
अहाँक चाही संग-साथ
लगा देत कोनो लाथ
किन्तु, नै बनत बात।

केतबो होएत साँच
लगि जाएत नाच
जनबाक लेल
करबे करत जाँच
केतबो चिचियाएब
निकलैत रहत आह
साँचोक लेल
दिअ पड़त गवाह।
❍

डायरीक पन्ना-३

हमर इतिहास अछि हमरे पास
जइमे देखि सकै छी
हम अपन धरती
आ अपन अकास
अपन सिरजन आ अपन नाश।

पूर्वजक कएल काज
छीनल आ छिनाएल ताज
राखब गिन-गिन
बरख, मास आ दिन
नीक अधलाह जे केने छी काम
से नै अछि दोसरठाम
सभटा हमर भूत
बनि-बनि दूत
अछि हमरे पास
हमर इतिहास।
❍

डायरीक पन्ना-४

केतेक गोटे केलक सुधारैक प्रयास
अन्तमे टूटि गेल सबहक आस
केते उपए लगबैत रहल पल-पल
सभ भऽ गेल अन्तमे असफल
हारि कऽ हमरा छोड़ि देलक
ऐ काजसँ मुँह मोड़ि लेलक
हुअए लगल चारूभरसँ आघात
ठोकरसँ भऽ गेलौं कात
बिलटि गेल सभ राज-काज
हँसैत अछि आब सकल समाज।

आबो जँ नै करब सुधार
डूमि जाएत घर-पलिबार
सोचैले भेलौं नाचार
समए कहैए आब करू विचार।

सोचै छी जँ ऐ दिस
लाजसँ झूकि जाइत अछि शीश
नै छै दोसर कोनो आधार
स्वयं कऽ सकै छी अपन सुधार।
❍

डायरीक पन्ना-५

जेतए केतौ गेलौं कोनो निमित्त
होइत रहल हमरे जीत
केलौं चढ़ाइ देर-सवेर
जीतते रहलौं बेर-बेर
हमरा सोझा सभ गेल हारि
संबन्धी सभकेँ देलौं तारि
सबहक गाड़ल खुट्टाकेँ देलिऐ उखाड़ि
हमर धक्का के लेत सम्हारि
नामक डंका बजए लगल
हमरे बातपर सभ चलए लगल।

ठमकि गेलौं अपने लग आबि
कोनो थाह नै रहल छी पाबि
हमरा सामने सभ गले हारि
हम गेलौं अपनेसँ हारि।
❍

डायरीक पन्ना-६

कुरसीक पौआ पीठमे गड़ल
हम छी बेकूफ जकाँ पड़ल
कहिया ई पीठपर सँ हटत
कहिया ई भार घटत।

अपन दुख केकरा कहब
आब केते कष्ट सहब
जानवर सन कुरसीक खुर
केने जाइत अछि पीठमे भूर
हटा दिअ निसाँस लेब
आबो नै खड़ा हुअए देब
उठि आब हम ठाढ़ हएब
समैकेँ एना नै गमाएब
ठाढ़ होइते कुरसी टुटत
भऽ सकैए माथो फूटत।

भीतरसँ उठि रहल रोष
हमरा नै देब पाछू दोष
आब नै हम सूतल रहब
नै एना झुकल रहब।
❍

डायरीक पन्ना-७

केतेक खोजलौं श्रेष्ट मीत
जे करत हरपल हित
पुरान छुटैत रहल
नव-नव भेटैत रहल नित।

सभ अपने स्वार्थे परेशान
गबैत रहैए अपने गान
अपनेमे जँ एतेक डुमत
केतएसँ रखते प्रीतक मान।

किन्तु, आइ भेटल हमर श्रेष्ट मीत
जे हमरे भीतर गबै छल गीत।
❍

डायरीक पन्ना-८

रहै छल जे संग-साथ
करै छेलौं ओकरासँ बात।

“चोटाह छै ई राह
ई गाछी छै बड़ भुताह।”

पूरा डरा गेल छल लोक
बाट चढ़िते धऽ लइ छेलै शोग
हम छेलौं पूरा निडर
लोककेँ भऽ गेल छेलै डर
अन्हार होइते काँपै थर-थर
सबेरे भागि जाइत छल घर।

भऽ गेल छै आइ अबेर
अन्हरिया लेने छै रस्ता घेर
भरल मेनमे विकार
बनि नव-नव अकार
आगू शब्द गन-गन
राति भेल सन-सन
लोककेँ डरबैत छेलौं
आइ हमहूँ डरा गेलौं
बीच बाटमे भुतही गाछी
आइ हमहूँ घेरा गेलौं।
❍

डायरीक पन्ना-९

हिल-मिल फेर फुलवाड़ी
लगा दियौ यौ
रंग-रंग बिरंगक पुष्प सजा दियौ यौ
एक-एक गाछक अपन इतिहास छै
एक-एक फूलक अपन सुवास छै
सुगंधसँ चारूभर गमका दियौ यौ
हिल-मिल......।

सभमे एक जान छै
सभमे एक तान छै
सभमे एक मान छै
सभमे एक गान छै
सूखलकेँ जलसँ पटा दियौ यौ
हिल-मिल......।

सभमे एक उल्लास छै
सभमे रस छै आ रसाभास छै
मौलाइलकेँ फेरसँ हरिआ दियौ यौ
पवन संगे पुष्पकेँ नचा दियौ यौ
हिल-मिल......।
❍

केतए छी हम

सैकड़ा नहि हजारक हजार
भरल छै भूतसँ बजार
कीनैत-बेचैत मनुखक मासु-हाड़
किछु चिचियाइत किछु खसौने घाड़
किछु अछि शान्त किछु करए तकरार
किछु हँसैत आ किछु कनैत जार-जार
दाँत-मुँह चमकाबैत
तुरंते भऽ जाइत अछि पार।

हम नुकाएल छी ओहीठाम
जेतए सभ किछुक लगि रहल दाम
नोंचि नेने अछि ओ सभ
हमरा देहक मासु-हाड़
अंग-अंग छोड़ा कऽ
कऽ देने अछि तार-तार
नेने हाथमे हाड़
हँसैत अछि बेसम्हार
हम देखै सभ किच्छो
कानै छी जार-जार।
❍

अजगर

ससरैत अछि सर-सर
हमरे दिस ई अजगर
नेने हमरे देहक नाप
मुँह बौने अजगर साँप।

भुखाएल छै तन
कामनासँ भरल मन
एकरा के रोकि सकत
के बीचमे टोकि सकत
तीव्र छै गति
चढ़ल छै कुमति
बँचैले चलए पड़त चाल।

नै तँ निश्चय धऽ लेत ई काल
करए पड़त कोनो उपचार
नै तँ हमरा घोंटि मारत ढेकार
मुँहसँ नै फुटए बकार
बढ़ा लेलौं अपन देहक अकार
गिरत हमरा तँ फटतै पेट
मुइल बापसँ हेतै भेँट।

❍

अकासमे ठाढ़ पंछी

अकासमे उड़ैत पंछी अँटकि गेल अछि
जेना मतिभ्रम भेलासँ ओ भटकि गेल अछि
चला रहल अछि पाँखि
एकटक तकैत आँखि
जोर लगौने बढ़बाक लेल
मंजिलपर चढ़बाक लेल
ने आगू बढ़ैत अछि ने पाछू
भऽ गेल अछि थीर
बन्हा गेल सभ शक्ति
लगि गेल केहेन पीर
कहि रहल ओकर मति
जे हम बढ़ि रहल छी अपने गति।

एकटक तकैत आँखि आ मन
आकि हमहूँ बनि गेलौं ओकरे सन?
❍

बीआ केर पता

सोचैत-सोचैत फाटए हीया
केतए भेटत ऐ गाछक बीआ।

ई अनचिन्ह गाछ
हमरा सोझहा करए नाच
देखि कऽ मन करए जाँच
नै भेटत बीआ
तँ नस्ल भऽ जाएत नास
टूटि जाएत मनक आस
तकैत-तकैत भेल छी निराश
बितल जाइत बरख आ मास
ओकरे भऽ सकैत अछि पता
जेकरासँ छै असली नाता
वएह कहि सकैत अछि
असली अता-पता।
❍

कटैत गाछ

हड़हड़ाइत कटि कऽ गिरैत गाछ
चिचियाइत बजल जे छल साँच।

“हम तँ करैत रहलौं सुकरम
कहियो नै केलौं कुकरम
करैत रहलौं उपकार
जइसँ अहाँक सपना हुअए सकार
अहाँ करैत रहलौं उपभोग
हम करैत रहलौं
फल-फूल आदिसँ सहयोग
हम केलौं न्याय
अहाँ केलौं अन्याय
हम केलौं पोषण
अहाँ केलौं शोषण
टुटैत कटैत सहैत अतियाचार
चुपचाप अहींक लेल तैयार।

सतत कर्मरत रहलौं हम
कहियो नै केलौं घमण्ड
तैयो अहाँ सभ मिलजुलि कऽ
देलौं हमरा प्राणदण्ड
हम केहेन छी उदण्ड
दोखी नै छी तैयो दण्ड।”
❍

नमन

हे बसुन्धरे शत् शत् नमन
अहाँक आँगन
उपजै सुमन
जइसँ उड़ैत सुगन्ध
भऽ निर्बन्ध
गमकि रहल दिग-दिगन्त
हे बसुन्धरे शत् शत् नमन।

अहींक चमनक छी हम कण
अहींक कृपासँ बनल अछि तन
धीरज, शक्ति दिअ हमरा मन
अहींक समरपित अछि ई तन
हे बसुन्धरे शत् शत् नमन।
❍

असल रूप

शंकित भेल छल मन
तँए देखलौं दरपन
देखिते अपन मुख
मनमे भरि गेल दुख
भेल अछि थिर आ मौन
किन्तु लगैए केहेन डेरौन
मुँह-आँखि, नाक-कान
जेना हिंसक जन्तु समान
आँखि दिस तकैत होइत अछि डर
काँपै छी थर-थर।

मुँह झाँपि केते काल रहबै
लोक पुछतै तब कथी कहबै
तत्काल सोझहासँ हटबै पड़त
ऐ कठकँ घटबै पड़त।
अछि ठामे सभ किच्छौ
दरपन सोझहासँ हटा रहल छी
आँखि मुइन-मुइन आब
दुखकँ घटा रहल छी।
❍

मनक मोड़

सोझहेमे अछि ओ स्वरूप
लगैत अछि केहेन अनूप
मुरुतक रूप
भऽ कऽ चुप
समाएल जा रहल अंग-अंगमे
जेना पहिनेसँ अछि देहक संगमे।

मनमे छल पूर्ण हएत कामना
किन्तु भऽ गेल दुखक सामना
औना रहल अछि मन
केना हएत आब शमन
डाहि रहल जेना चिनगी
कठमे बितैत जिनगी।

लेने छी हाथमे
मनक तरूआरि
तरासि-तरासि अंगसँ
देबै उतारि
पोर-पोरसँ तोड़ि रहल छी
मनकेँ ओनएसँ मोड़ि रहल छी।
❍

कामना

अपन-अपन कामना सबहक पास
धरतीसँ पसरल अकास
बढ़ले जा रहल मासे-मास
होइते बाधा दुखक आस
आश निरास तैयो आस
जिनगीक पाश।

निरबुधिया पोता फानि कऽ बजल-
“यौ बाबा, आबि गेल फागुन मास।”

“हँ रउ, बौआ रौदा भऽ गेल
आब हएत जाड़सँ उगरास
पौरू साल कहाँ भेल छल जाड़
ऐबेरक जाड़ तँ देहकँ कऽ देलक तार-तार
घूरमे जरि गेल सभटा लार-पुआर
लगै छल नै बँचत जान
लीलसाक भरल छल खान
दुनू बेटा भऽ गेल जुआन
हमरो बढ़ि गेल सामाजिक शान
परिवारक भार उठौलक कान्ह
आब निचेन भेल हमरो जान
टहलब-बुलब किछु करब दान
गाबि सकब सुखसँ भक्ति गान।”

“यौ बाबा, नै करू लाथ
हमरा कहू एकटा बात

झगड़ा केलक बाबूसँ काका
मंगै छेलै तीन हजार टाका
कहै छेलै- तोहर नै ठीक रहलौ इमान
भऽ गेलँह पूरा बेइमान
बाबू अछि सभ झगड़ाक जड़ि
सनकेलकौ तोरा जिनगी भरि
ऐ जाड़मे करतौ ओ परलोक बास
बाँटि लेबौ सभ चास-बास
अपन-अपन चास आ अपन-अपन बास
देखिहँ सिनेमा आ खेलिहँ ताश
अपना सम्पतिकेँ करिहेँ नाश।
बाबा, ठीके करबै परलोक बास
बीतल जा रहल छै जाड़क मास।"

घुमए लगलै माथक चाक
बाबा भेल अवाक्।
❍

देश गीत

आउ बन्धु आउ स्वतंत्राक गीत गाउ
श्वेत श्याम नर-नार मिलि एकता बनाउ
ऊसर धराकेँ श्रमसँ सींच उर्वर शीघ्र बनाउ
आउ बन्धु आउ स्वतंत्रताक गीत गाउ
संस्कृति-सभ्यताकेँ नभ तक पहुँचाउ
सम्पन्नताकेँ दियौ आमंत्रण
विपन्नताकेँ दूर भगाउ
तिमिर दुर्गकेँ तोड़ि ज्ञानक तिरंगा लहराउ
भारत भू केँ विश्वक अग्रणी देश बनाउ
आउ बन्धु आउ स्वतंत्रताक गीत गाउ।
❍

जुलुसक पछुआ

हजारक हजार टाँग-हाथ
किन्तु एकेटा अछि माथ
ठमकैत आ बमकैत बढ़ि रहल अछि आब
गरजैत सड़कपर इनकिलाब
नै अछि कान-आँखि
तैयो लगल अछि जेना पाँखि
एकगोटे केलक बकटेंटी
अखनि केना सुनत अपन हैंठी
केना सुनतै अखनि गारि-बात
जखनि छै हजार साथ
पकड़ि ओकर तोड़ि देलक गात
तोड़ए लगल तान
कंठ मोंकि लऽ लेलक प्राण
बढ़ि गेल सभ आगाँ
जेना लगल हो धागा
नै छै पता आगू की भेल बात
पाछूसँ सभ देने संग साथ
लहाशकेँ फेकि देलक बाटक कात
हम तँ खरिदुआ अंग
मात्र चलैक छै संग-संग
बनल छी पछिला हिस्सा
चलि रहल छै आपसी खिस्सा
ओकर कुकृत्यकेँ हम जानि रहल छी
नचार भऽ मने-मन कानि रहल छी
बिना जरिमाना केना भेटत माफी
भीड़क अंग छी तँए हमहूं पापी।
❍

कनेक सुनू

1
खेतक ऊपर उधियाइत लगनी गीत
मन पड़ल जिनगीक गीत
गमकि उठल मनक दुआरि
ठाढ़ छी सम्हारि ओइ आरि।

2
बैसल रहि गेलौं पछताइत
जिनगी भऽ गेल
अन्हरिया राति।

3
प्रेम नै केलौं
केलौं चोरि
हमरा जिनगीमे
देलौं जहर घोइर।

4
जिनगी नै अछि किछु
तैयो अछि सभ किछु
केतबो काँट गड़ए
तैयो फूल बिछू।
❍

असल मरद

अँगना गारि पढ़ैत अछि कानि-कानि
जेना बिलमि-बिलमि गाबैत हो गाइन
आगू की हएत से नै जानि
सुनि कुबाइन देहकेँ तानि
अपन गलती केना लेबै मानि
सींगमे लगौने खून
गरजि रहल छी अपने धून
जेना करैत अछि खुनियाँ बरद
तामसे करैत गरद
आइसँ बनलौं असल मरद।
❍

पोसा परबा

परबा मानि लेलक आब पोस
पूरा परिवार बनि गेल दोस
सभसँ भऽ गेल जान-पहिचान
दाना दऽ कऽ राखै मान
खाइत अछि आब बासमती चाउर
ठामे-ठाम मारैत अछि भाउर
लग अबैत छल धिया-पुताक बातपर
बैस जाइत छल हाथ आ माथपर
कालक गतिशील आँखि
दौगैत-फड़फड़ाइत परबाक पाँखि
मांसक माँगपर बाजए पड़ल
“परबाक छै भागे जरल
एहेन अतिथि जँ पहुँचल दुआरि
पोसा परबाकेँ दियौ आइ मारि
एहेन लोक कहिया आएत से नै जानि
फेर हेतै परबा बात लिअ मानि।”
पानिमे डुमा कऽ जखनि लेलक जान
परबाकेँ भेल मनुखक पहचान।
❍

हेलवार

घुच्ची भरि पानिमे कऽ रहल छी खेलवार
कखनो ऐपार कखनो ओइपार
बनए चाहै छी असली हेलवार
संकटमे करए पड़त धारपार
धारक पेट हो अगम-अपार
जखनि छुरी फनकै
रहि-रहि धारा सनकै
देख कऽ डरे मन झनकै
ठमकल बटोहीक माथ ठनकै
तखनि जँ करब पार
तब ने बनब हम असली हेलवार।
❍

कलीक प्रश्न

कली पुछैत अछि कलीसँ
एतेक दुखित किए छी भेल
गुन-गुन गान सुनबैत छल हरपल
ओ भ्रमर केतए गेल
सुनू-सुनू गप गुनू
दुख आएल तँ सुख चलि गेल
हमरा छल हृदैक मेल
ओकरा लेल धुरखेल
अहूँक समए आएत एहेन तँ
जानब भ्रमरक खेल।
❍

जय हे किसान

परतीकेँ तोड़ि
ढेपकेँ फोड़ि
कण-कणकेँ कोड़ि
जलसँ घोरि
केलौं कादो
माह भादो
रौपलौं धान
जय हे किसान, जय हे किसान।

केतेक बेर चासे-समार
पड़लौं बेमार
बिनु उपचार
अपन आन
सभ बेइमान
अहाँक लेल सभ समान
जय हे किसान, जय हे किसान।

माघक बदरी कनकनी बसात
जीवा-जन्तुक ठिठुरैत गात
जीअन-मरण खेतक साथ
अहीं बुते उपजत धान
जय हे किसान, जय हे किसान।

बैशाखक रौदमे जरैत
रहै छी दिन भरि गुमसड़ैत
धरतीकेँ सिंचित करबाक लेल
अपने पियासे रहै छी मरैत

रौदी-दाही वा फाटए असमान
फलक कोनो चिन्ता नै
कर्मम लगौने जी-जान
जय हे किसान, जय हे किसान।

अपना अभिलाषाकेँ डाहि-जारि
करम करै छी नित सम्हारि
सफलता पकड़ने रहै अछि पाइर
धेने एक्के तान, गबै छी कजरीगान
जय हे किसान, जय हे किसान।

अहाँ छी देशक अभिमान
तैयो सहै छी नित अपमान
बँचबै छी जन-जनक प्राण
अपन दैत बलिदान
जय हे किसान, जय हे किसान।

हरक नाशपर सबहक आश
चहुदिस छिटकल हरिअर प्रकाश
उस्सर धरतीपर अहाँ
लिखै छी नव-नव इतिहास
अहीं कऽ सकै छी अन्नदान
जय हे किसान, जय हे किसान।
❍